प्रवाहिनी

- *श्रीमती अन्जु चौधरी*
वरिष्ठ शोध सहायक

ओ "प्रवाहिनी" बहती रहो निरन्तर,
कभी काव्य तो कभी गद्य का जल लेकर ।
तुझ में ही समाये विचार अनेक,
तेरे पन्नों पर हम अनेक से हो गये एक ।।
आती रहे सदा खुश्बू अपनी मिट्टी की तुझसे ही उड़-उड़कर ,
ओ "प्रवाहिनी" बहती रहो निरन्तर ।।
कभी हास्य तो कभी ज्ञान का जल लेकर ,
वर्ष दर वर्ष तेरा रूप यूँ ही सँवरता रहे ।
तेरे माध्यम से विचार प्रकाश बन बिखरता रहे,
आती रहे रोशनी ज्ञान की तुझसे ही छन-छन कर ।
ओ "प्रवाहिनी" बहती रहो निरन्तर ।।
कभी विचार तो कभी भाव का जल लेकर,
तुम हो हिंदी की बेटी,
मानव विचार से हो जन्मी,
पाये प्यार तेरा हर पाठक तुझकों पढ़-पढ़ कर
ओ "प्रवाहिनी" बहती रहो निरन्तर ।।
कभी प्रश्न तो कभी उत्तर बन-बन कर,
हम रहे ना रहे, तेरा रूप रहे सदा खिलता,
अँधियारे में ज्ञान-दीप रहे सदा जलता,
तेरे अक्षर की एक-एक बूँद बरसे अमृत बन-बनकर,
ओ "प्रवाहिनी" बहती रहो निरन्तर ।।
कभी काव्य तो कभी गद्य का जल लेकर ।

हिंदी एक जानदार भाषा है। वह जितनी बढ़ेगी देश को उतना ही लाभ होगा ।
* पं० जवाहर लाल नेहरू *